स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भाकृअनुप
ICAR

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान
हेसरघट्टा लेक पोस्ट, बेंगलूरु - 560 089

ICAR-IIHR

वर्ष 2019–20, अंक 10

राजभाषा पत्रिका

बागवानी

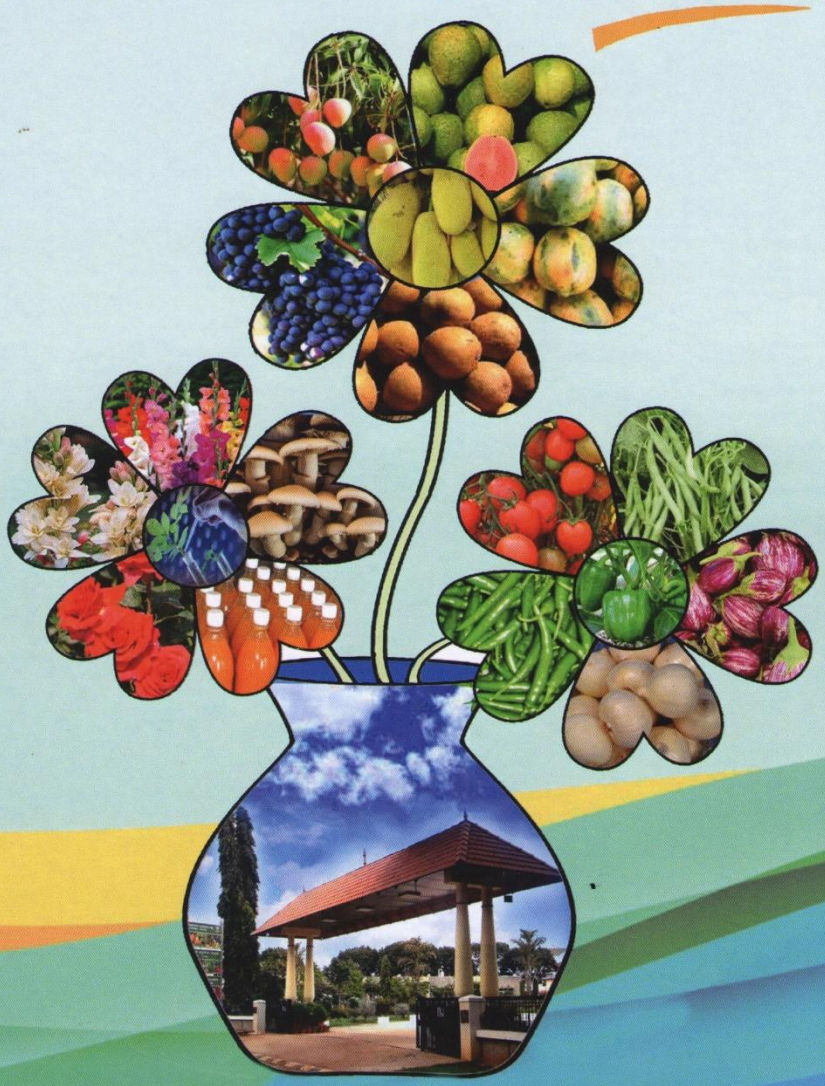

हिमलरेन्डियॉ : बाड़ तथा बोन्साई के लिए उपयुक्त पौध

डॉ. प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी
भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु

हिमालयी रेन्डिया (हिमलरेन्डिया टेट्रास्पर्मा) एक छोटे आकार का पौधा है, जो सम्पूर्ण हिमालयीय क्षेत्र में काराकोरम से अरूणाचल प्रदेश तक 1400 से 2300 मीटर की ऊँचाई पर प्राकृतिक रूप से उगता पाया जाता है (यामाजाकी, 1970) । यह मुख्यतया खुले क्षेत्रों में पत्थरों के आसपास तथा सूखी नदियों या नालों के बेसिन में उगता है । कुमाऊँ की सीढीनुमा खेतों की मेढों तथा खेतों के कोनों पर इसे बहुधा उगता देखा सकता है । इसे कुमाऊँनी भाषा में 'दडमिया' तथा नेपाली में 'धनालो' के नाम से जाना जाता है ।

यह रूबिएसी परिवार का सदस्य है। इसके पौधे छोटे सहिष्णु तथा झाडीनुमा होते हैं । पौधों की अधिकतम ऊँचाई 1 मीटर से अधिक नहीं होती है। लेकिन सामान्यतया पौधे एक मीटर से छोटे ही रहते हैं । जानवरों द्वारा लगातार चरने के कारण इनकी ऊँचाई बढ़ नहीं पाती। इसका मुख्य तना छोटा होता है और इससे कई शाखायें निकलती हैं । बहुत–सी प्राथमिक तथा द्वितीयक शाखाएँ होने तथा इनके मध्य कम अन्तर होने के कारण पौधे का छत्रक सघन होता है । इसकी पत्तियाँ लगभग 0.7 से 1.5 से.मी. लम्बी तथा 0.7 से 0.74 से.मी. चौड़ी होती हैं । पत्तियाँ गोलाभ, चमकदार हरे रंग की तथा मुलायम किनारे वाली होती हैं । पत्तियाँ शाखाओं के सिरे पर झुण्ड–सा बनाती हैं । पत्तियाँ सरल होती हैं तथा आधार के निकट आकर सँकरी हो जाती हैं और शाखा से एक छोटे 1–2 मि.मी. लम्बे वृन्त से जुड़ी होती हैं । पौधों का फैलाव 0.5 से 1.5 मीटर तक होता है । शाखाओं की गहनता तथा पत्तियों के घनेपन के कारण पौधा एक छत्रक की तरह दिखता है । पौधे की जड़ गहरी तथा अच्छी तरह से विकसित होती है, जो इसे शुष्क जलवायु में भी हरा–भरा रखने में मदद करती है । मुख्य जड 1 से 2 मीटर गहराई तक जा सकती है । इसमें फूल मई से अगस्त माह तक आते हैं । फूल एकल तथा छोटे आकार के पीले–सफेद रंग के होते हैं । फूल 1 से 1.2 लम्बे, 0.8 – 1.0 से.मी. व्यास तथा वृन्तहीन होते हैं । पुष्प में 5 कुप्पे आकार के 0.4 से 0.5 सेमी. लम्बे, नुकीले बाहर की ओर मुडे हुये दल पुंज होते हैं । ये पीले, सफेद रंग के होते हैं । पुंकेसर छोटे आकार के तथा बाहर को निकले होते हैं । ये पीले सफेद रंग के होते हैं । स्त्री–केसर की वर्तिका लम्बी तथा फिलीफॉर्म होती है । वर्तिका तथा वर्तिकाग्र आकर तरह निकले होते हैं। इसके फल गोल होते हैं तथा इनका व्यास 6–10 मि.मी. तक होता है। प्रारंभिक अवस्था में ये हरे रंग के होते हैं तथा परिपक्व होने पर ये जामुनी रंग के हो जाते हैं । फल दिखने में छोटे अनार की तरह दिखते हैं । फलों का गूदा पेचिश में इस्तेमाल किया जाता है । पेट के कीडे मारने के लिए तथा त्वचा रोगों के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है (अजैब इत्यादि 2016, सिधू तथा ठाकुर 2017)। इसे कुछ भागो में ऐंटीसेप्टिक के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है ।

पौधों की छोटी–छोटी पत्तियों तथा सघन वृद्धि के गुण के कारण यह पौधा झुरमुट (shrubbery) बनाने के लिए उपयुक्त सिद्ध हो सकता है। सूखे के प्रति सहनशीलता इस पौधे की अन्य विशेषताएँ हैं । मध्यम उँचाई वाले क्षेत्रों में यह एक अच्छा आलंकारिक पौधा सबित हो सकता है। परन्तु गर्म तथा मैदानी क्षेत्रों में इसकी सफलता पर कार्य होना शेष है। इस पौधे में छोटा पत्तियाँ तथा छोटा फल इसे बोन्साई बनाने के लिए एक उपयुक्त पौधा सिद्ध करते हैं ऐसी दशा में यह शीतोष्ण या उष्ण दोनों प्रकार की जलवायु के लिए एक अच्छा आलंकारिक पौधा हो सकता है ।

तरणी 1. हिमलेरन्डिया टेट्रास्पर्मा के आकारिकीय गुण

	गुण	परिसर	औसत
	ऊँचाई	0.5 – 1.3 मीटर	0.7 मीटर
	वृधि का प्रकार	बौना , सघन	––
	फैलाव	0.4–1.5 मीटर	0.5 मीटर
	शाखाओं की संख्या	7– 17	11.60
	पत्ती का प्रकार	सरल	–

	पत्ती की लम्बाई	0.6 – 1.5 सेमी	0.9 सेमी
	पत्ती की चौडाई	0.5 – 0.9 सेमी	0.7 सेमी
	पुष्पण काल	मई से जुलाई	–
	पुष्प की लम्बाई	0.8 – 1.4 सेमी	1.1 सेमी
	पुष्प का व्यास	0.8 – 1.1 सेमी	1.9 सेमी
	फलों की लंबाई	0.8 – 2.0 सेमी	1.2 सेमी
	फलों का व्यास	0.8 – 1.5 सेमी	1.1 सेमी

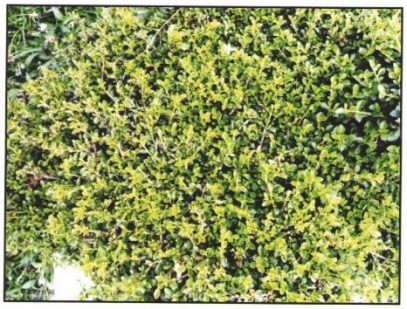

चित्र : प्राकृतिक दशा में उगता पौधा

चित्र : गमले में लगा पौधा